IJIRSET
International Journal of Innovative Research in
SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

e-ISSN: 2319-8753 | p-ISSN: 2347-6710

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

Volume 11, Issue 6, June 2022

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 8.118

9940 572 462
6381 907 438
ijirset@gmail.com
www.ijirset.com

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology (IJIRSET)

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106334|

भील जनजागृति के अग्रदूत - गोविंद गुरु

Dr. Mandroop Ram Deora

Associate Professor, History, S.D. Government College, Beawar, Rajasthan, India

सार

19वीं शताब्दी में भारत में धर्म सुधार आंदोलन शुरू हुआ । राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेक महापुरुषों के नेतृत्व में न केवल धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समाज में सुधार के लिए प्रयास किए गए बल्कि राजनीतिक रूप से भी लोगों को जागृत करने का प्रयास हुआ । राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा।स्वामी दयानंद सरस्वती के राजस्थान में प्रवास के फलस्वरूप यहां जनजागरण में तेजी आई, दक्षिण राजस्थान का आदीवासी इलाका जो भोमट कहलाता है यहां भी भीलों ने गोविन्द गुरु,सुर्जी भगत, मोतीलाल तेजावत, भोगीलाल पंड्या जैसे नायकों के नेतृत्व न केवल समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए जाग्रत हुए बल्कि अंग्रेजों तथा उनके अधीनस्थ रजवाड़ों के खिलाफ अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए समय-समय पर संघर्ष करते हुए नजर आए।इन सब में गोविन्द गुरु का विशेष योगदान रहा, जिन्होंने न केवल धार्मिक व सामाजिक सुधारों पर जोर दिया ,उसके लिए आन्दोलन चलाया बल्कि राजनीतिक स्वतन्त्रता के लिए भील समुदाय को एकजुट करने का कार्य भी किया।

शब्द संकेत:अग्रदूत , धर्म सुधार आंदोलन, रजवाड़े (देशी रियासत),भोमट, संप सभा, भगत पंथ, भूरेटिया, धूणा

परिचय

भील जनजाति:भील का शाब्दिक अर्थ - तीर चलाने वाला व्यक्ति से लिया जाता है। कर्नल जेम्स टॉड ने भीलो को वन पुत्र से संबोधित किया है। भील समुदाय के लोग अरावली की पहाड़ियों और जंगलों में छोटे-छोटे समूहों में निवास करते हैं। लकड़ी काटना, घास-फूस, फल-फूल ,जड़ी-बूटी,शहद तथा गोंद एकत्रित करना, मछली पकड़ना व जंगली जानवरों का शिकार करना इनका मुख्य पेशा है। सीधे- सादे लगने वाले यह लोग स्वभाव से स्वच्छंद प्रकृति के होते हैं। वे अशिक्षित व रूढ़िवादी होने के साथ-साथ परंपरागत जीवन पद्धति से जीवन यापन करने में विश्वास करते हैं, इसमें किसी भी प्रकार का दखल उन्हें पसंद नहीं है ।

भील जनजाति के लोग मुख्य रूप से राजस्थान की दक्षिणी क्षेत्र (उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा प्रतापगढ़ सिरोही दक्षिणी राजसमंद व दक्षिणी भीलवाड़ा जिला) और राजस्थान के लगता हुआ उत्तरी पूर्वी गुजरात और मध्य प्रदेश के रतलाम, झाबुआ इलाके में निवास करते हैं, जिसे भोमट कहा जाता है।

गोविंद गुरु का जन्म डूंगरपुर रियासत के बांसिया गांव में एक बंजारा परिवार में मार्गशीर्ष शुक्ल पूर्णिमा विक्रम संवत 1914 (20 दिसम्बर 1858 ईस्वी) में हुआ । बचपन से ही उनकी रूचि शिक्षा और अध्यात्म की रही थी।[1] उन्होंने स्वामी दयानंद सरस्वती की प्रेरणा और अपने गुरु (बूंदी अखाड़े के साधु राजगिरी) के आशीर्वाद से अपना संपूर्ण जीवन देश, धर्म व समाज की सेवा में समर्पित कर दिया था। उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र आदीवासी वागड़ क्षेत्र को चुना। गोविंद गुरु ने आदिवासियों की सेवा के लिए 1983 ईस्वी में संप सभा की स्थापना की।[2]

(संप शब्द का अर्थ - परस्पर एकता, भ्रातृत्व, प्रेम भाव ,समता, समन्वय व साथ - साथ रहने से हैं)

सम्प सभा का उद्देश्य विशुद्ध रूप से सांस्कृतिक एवं सामाजिक अभियान था ,जिसके द्वारा लोगों में भाईचारे सहिष्णुता व सदाचार की गुणों का विकास कर एक आदर्श समाज की स्थापना करना था । गोविंद गुरु ने आदिवासियों से शराब,मांस, व्यभिचार से दूर रहने ,चोरी डकैती की राह को छोड़कर खेती व मजदूरी से अपनी आजीविका चलाने , प्रतिदिन स्नान,यज्ञ, एवं कीर्तन करने, पाठशाला स्थापित कर बच्चों को पढ़ाने, अपने झगड़े पंचायत से सुलझाने,अन्याय न सहने, अंग्रेजों के पिट्ठू जागीरदारों को लगान न देने, बेगार न करने, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार कर, स्वदेशी अपनाने के साथ-साथ अपने धर्म के संस्कारों के अनुसार जीवन यापन करने पर बल दिया।[3]

गोविंद गुरु के विचारों से प्रभावित होकर बड़ी संख्या में आदिवासी उनके शिष्य बनने लग गए। गोविंद गुरु उन्हें धूणे की पवित्र अग्नि के सामने रुद्राक्ष की माला पहना कर सत्य के मार्ग पर चलने का प्रण दिलवाकर दीक्षित करते थे। दीक्षित भील भगत कहलाता था और यह अभियान भगत आंदोलन कहलाया और इस तरह एक नया पंथ 1890 ईस्वी में शूरू हुआ जिसे भगत पंथ नाम दिया गया।

गोविन्दगिरि या **गोविंद गुरु बंजारा**(1858-1931), भारत के एक सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे जिन्होने वर्तमान राजस्थान और गुजरात के आदिवासी बहुल सीमावर्ती क्षेत्रों में 'भगत आन्दोलन' चलाया। 'क्रांतिनायक संत गोविंद गुरु

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106334|

बंजारा' इन्होने ब्रिटीशो के खिलाफ राजस्थान, मध्यप्रदेश एवं गुजरात आदि प्रदेश के क्षेत्र में पाच लाख भिल्ल- बंजारा आदिवासिओ का नेतृत्व करके मातृभूमि के लिये आंदोलन छेडा।[1] [2][3]

गोविन्द गुरु का जन्म 20 दिसम्बर, 1858 को डूंगरपुर जिले के बांसिया (बेड़िया) गांव में गौर जाति के एक बंजारा परिवार में हुआ था। बचपन से उनकी रुचि शिक्षा के साथ अध्यात्म में भी थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से उन्होंने अपना जीवन देश, धर्म और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी गतिविधियों का केन्द्र वागड़ क्षेत्र को बनाया।[4]

उन्होने न तो किसी स्कूल-कॉलेज में शिक्षा ली थी और न ही किसी सैन्य संस्थान में प्रशिक्षण पाया था। अंग्रेजी हुकूमत के दिनों जब भारत की आजादी में हर व्यक्ति अपने-अपने ढंग से योगदान दे रहा था तब अशिक्षा और अभावों के बीच अज्ञान के अंधकार में जैसे-तैसे जीवनयापन करते आदिवासी अंचल के निवासियों को धार्मिक चेतना की चिंगारी से आजादी की अलख जगाने का काम गोविंद गुरु ने किया। वे ढोल-मंजीरों की ताल और भजन की स्वर लहरियों से आम जनमानस को आजादी के लिए उद्वेलित करते थे।

गोविंद गुरु ने भगत आंदोलन 1890 के दशक में शुरू किया था। आंदोलन में अग्नि देवता को प्रतीक माना गया था। अनुयायियों को पवित्र अग्नि के समक्ष खड़े होकर पूजा के साथ-साथ हवन (अर्थात् धूनी) करना होता था। 1883 में उन्होने 'सम्प सभा' की स्थापना की। इसके द्वारा उन्होंने शराब, मांस, चोरी, व्यभिचार आदि से दूर रहने; परिश्रम कर सादा जीवन जीने; प्रतिदिन स्नान, यज्ञ एवं कीर्तन करने; विद्यालय स्थापित कर बच्चों को पढ़ाने, अपने झगड़े पंचायत में सुलझाने, अन्याय न सहने, अंग्रेजों के पिट्ठू जागीरदारों को लगान न देने, बेगार न करने तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी का प्रयोग करने जैसे सूत्रों का गांव-गांव में प्रचार किया।[4]

कुछ ही समय में लाखों लोग उनके भक्त बन गये। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को सभा का वार्षिक मेला होता था, जिसमें लोग हवन करते हुए घी एवं नारियल की आहुति देते थे। लोग हाथ में घी के बर्तन तथा कन्धे पर अपने परम्परागत शस्त्र लेकर आते थे। मेले में सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं की चर्चा भी होती थी। इससे वागड़ का यह आदिवासी क्षेत्र धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार तथा स्थानीय सामन्तों के विरोध की आग में सुलगने लगा।[5]

17 नवम्बर, 1913 (मार्गशीर्ष पूर्णिमा) को मानगढ़ की पहाड़ी पर वार्षिक मेला होने वाला था। इससे पूर्व गोविन्द गुरु ने शासन को पत्र द्वारा अकाल से पीड़ित आदिवासियों से खेती पर लिया जा रहा कर घटाने, धार्मिक परम्पराओं का पालन करने देने तथा बेगार के नाम पर उन्हें परेशान न करने का आग्रह किया था; पर प्रशासन ने पहाड़ी को घेरकर मशीनगन और तोपें लगा दीं। इसके बाद उन्होंने गोविन्द गुरु को तुरन्त मानगढ़ पहाड़ी छोड़ने का आदेश दिया। उस समय तक वहां लाखों भगत आ चुके थे। पुलिस ने कर्नल शटन के नेतृत्व में गोलीवर्षा प्रारम्भ कर दी, जिससे हजारों लोग मारे गये। इनकी संख्या 1,500 से तक कही गयी है।

पुलिस ने गोविन्द गुरु को गिरफ्तार कर पहले फांसी और फिर आजीवन कारावास की सजा दी। 1923 में जेल से मुक्त होकर वे भील सेवा सदन, झालोद के माध्यम से लोक सेवा के विभिन्न कार्य करते रहे। 30 अक्तूबर, 1931 को ग्राम कम्बोई (गुजरात) में उनका देहान्त हुआ। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को वहां बनी उनकी समाधि पर आकर लाखों लोग उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।[6]

विचार-विमर्श

गोविन्द गुरू ने अपने सन्देश को लोगों तक पहुंचाने के लिए साहित्य का सृजन भी किया। वे लोगों को गीत सुनाते थे। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित पंक्तियों में गोविन्द गुरू अंग्रेजों से देश की जमीन का हिसाब मांग रहे हैं और बता रहे हैं कि सारा देश हमारा है। हम लड़कर अपनी माटी को अंग्रेजों से मुक्त करा लेंगे।

तालोद मारी थाली है, गोदरा में मारी कोड़ी है (बजाने की)
अंग्रेजिया नई मानू नई मानूं
अमदाबाद मारो जाजेम है-2 कांकरिये मारो तंबू हे
अंग्रेजिया नई मानू नई मानूं
…….. धोलागढ़ मारो ढोल है, चित्तोड़ मारी सोरी (अधिकार क्षेत्र) है।
आबू में मारो तोरण है, वेणेश्वर मारो मेरो है।
अंग्रेजिया नई मानू. नई मानूं
दिल्ली में मारो कलम है, वेणेश्वर में मारो चोपड़ो है,
अंग्रेजिया नई मानू. नई मानूं
हरि ना शरणा में गुरु गोविंद बोल्या
जांबू (देश) में जामलो (जनसमूह) जागे है, अंग्रेजिया नई मानू. नई मानूं।।

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |

||Volume 11, Issue 6, June 2022||

| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106334|

गोविंद गुरू अंग्रेजों की नीतियों को खूब समझते थे और उन्हें वे 'भूरिया' कहते थे । वे इस बारे में लोगों यह गीत गाकर बताते थे–

दिल्ली रे दक्कण नू भूरिया, आवे है महराज।
बाड़े घुडिले भूरिया आवे है महराज।।
साईं रे भूरिया आवे है महराज।
डांटा रे टोपीनु भूरिया आवे हैं महराज।।
मगरे झंडो नेके आवे है महराज।
नवो-नवो कानून काढे है महराज।।
दुनियां के लेके लिए आवे है महराज।
जमीं नु लेके लिए है महराज।।
दुनियांं नु राजते करे है महराज।
दिल्ली ने वारु बास्सा वाजे है महराज।।
धूरिया जातू रे थारे देश।
भूरिया ते मारा देश नू राज है महराज।।

वैेसे कहने को तो यह एक भजन है और "राजा है महराज" जैसे टेक के होने के कारण यह समूह गीत की तरह गाया जाता था। परन्तु यह भजन कम, राजनीतिक ककहरा ज्यादा है, जिसेस्कूल के मास्टर की तरह गोविंद गुरू सभी को रटाते थे। खास बात यह कि वे व्यापक एकता चाहते थे और इस कारण वे राजस्थानी हिंदी का उपयोग करते थे। वे जानते थे कि

उनके सांस्कृतिक संदर्भ में यही (हिंदी) भाषा जनांदोलन की भाषा हो सकती है। [5]

क्रांतिकारी संत गोविंद गुरु के बड़े बेटे हरिगिरि का परिवार बांसिया में छोटे बेटे अमरूगिरि का परिवार बांसवाड़ा जिले के तलवाड़ा के पास उमराई में बसा है। गोविंद गुरु के जन्म स्थान बांसिया में निवासरत परिवार की छठी पीढ़ीउनकी विरासत को संभाले हुए है। गोविंद गुरु के पुत्र हरिगिरि, उनके बेटे मानगिरि, उनके बेटे करणगिरि बेटे नरेंद्र गिरि और छठी पीढ़ी में उनके बेटे गोपालगिरि मड़ी मगरी पर रहकर गुरु के उपदेशों को जीवन में उतारने का संकल्प प्रचारित कर रहे हैं।[7]

परिणाम

१७ नवम्बर १९१३ को मानगढ़ में भील समुदाय के हज़ारों लोगों को अंग्रेज़ सरकार ने गोली बरसाकर हत्या कर दी थी। इसे ही **मानगढ़ नरसंहार** कहते हैं। [1] स्थानीय लोग इस घटना को जलियावाला बाग हत्याकांड के समरूप बताते हैं।[2] भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अमृतसर के जलियांवाला बाग कांड की खूब चर्चा होती है; पर मानगढ़ नरसंहार को संभवतः इसलिए भुला दिया गया, क्योंकि इसमें बलिदान होने वाले लोग निर्धन वनवासी थे।[8]

मानगढ़, राजस्थान में बांसवाड़ा जिले का एक पहाड़ी क्षेत्र है। यहां मध्यप्रदेश और गुजरात की सीमाएं भी लगती हैं। यह सारा क्षेत्र आदिवासी बहुल है। मुख्यतः यहां भील आदिवासी रहते हैं। स्थानीय सामन्त, रजवाड़े तथा अंग्रेज इनकी अशिक्षा, सरलता तथा गरीबी का लाभ उठाकर इनका शोषण करते थे। इनमें फैली कुरीतियों तथा अंध परम्पराओं को मिटाने के लिए गोविन्द गुरु के नेतृत्व में एक बड़ा सामाजिक एवं आध्यात्मिक आंदोलन हुआ जिसे 'भगत आन्दोलन' कहते हैं।

गोविन्द गुरु का जन्म 20 दिसम्बर, 1858 को डूंगरपुर जिले के बांसिया (बेड़िया) गांव में हुआ ।

गोविंद गुरु ने भगत आंदोलन 1890 के दशक में शुरू किया था। आंदोलन में अग्नि को प्रतीक माना गया था। अनुयायियों को अग्नि के समक्ष खड़े होकर धूनी करना होता था। 1883 में उन्होने 'सम्प सभा' की स्थापना की। इसके द्वारा उन्होंने शराब, मांस, चोरी, व्यभिचार आदि से दूर रहने; परिश्रम कर सादा जीवन जीने; प्रतिदिन स्नान, यज्ञ एवं कीर्तन करने; विद्यालय स्थापित कर बच्चों को पढ़ाने, अपने झगड़े पंचायत में सुलझाने, अन्याय न सहने, अंग्रेजों के पिट्ठू जागीरदारों को लगान न देने, बेगार न करने तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी का प्रयोग करने जैसे सूत्रों का गांव-गांव में प्रचार किया।[3]

कुछ ही समय में लाखों लोग उनके भक्त बन गये। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को सभा का वार्षिक मेला होता था, जिसमें लोग हवन करते हुए घी एवं नारियल की आहुति देते थे। लोग हाथ में घी के बर्तन तथा कन्धे पर अपने परम्परागत शस्त्र लेकर आते थे। मेले में सामाजिक तथा राजनीतिक समस्याओं की चर्चा भी होती थी। इससे वागड़ का यह वनवासी क्षेत्र धीरे-धीरे ब्रिटिश सरकार तथा स्थानीय सामन्तों के विरोध की आग में सुलगने लगा।[9]

17 नवम्बर, 1913 (मार्गशीर्ष पूर्णिमा) को मानगढ़ की पहाड़ी पर वार्षिक मेला होने वाला था। इससे पूर्व गोविन्द गुरु ने शासन को पत्र द्वारा अकाल से पीड़ित आदिवासियों से खेती पर लिया जा रहा कर घटाने, धार्मिक परम्पराओं का पालन करने देने तथा बेगार

|e-ISSN: 2319-8753, p-ISSN: 2347-6710| www.ijirset.com | Impact Factor: 8.118| A Monthly Peer Reviewed & Referred Journal |
||Volume 11, Issue 6, June 2022||
| DOI:10.15680/IJIRSET.2022.1106334|

के नाम पर उन्हें परेशान न करने का आग्रह किया था; पर प्रशासन ने पहाड़ी को घेरकर मशीनगन और तोपें लगा दीं। इसके बाद उन्होंने गोविन्द गुरु को तुरन्त मानगढ़ पहाड़ी छोड़ने का आदेश दिया। उस समय तक वहां लाखों भगत आ चुके थे। पुलिस ने कर्नल शटन के नेतृत्व में गोलीवर्षा प्रारम्भ कर दी, जिससे हजारों लोग मारे गये। इनकी संख्या 1,500 से तक कही गयी है।[10]

निष्कर्ष

पुलिस ने गोविन्द गुरु को गिरफ्तार कर पहले फांसी और फिर आजीवन कारावास की सजा दी। 1923 में जेल से मुक्त होकर वे भील सेवा सदन, झालोद के माध्यम से लोक सेवा के विभिन्न कार्य करते रहे। 30 अक्तूबर, 1931 को ग्राम कम्बोई (गुजरात) में उनका देहान्त हुआ। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को वहां बनी उनकी समाधि पर आकर लाखों लोग उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।[11]

मानगढ़ राजस्थान में बांसवाड़ा जिले का एक पहाड़ी क्षेत्र है। यहां मध्यप्रदेश और गुजरात की सीमाएं भी लगती हैं। यहाँ पर महान संत गोविंद गुरु के नेतृत्व में 1500 भीलों ने अपना बलिदान दिया था। यह बलिदान आजादी के आंदोलन में अब तक ख्यातनाम जलियांवाला बाग के बलिदान से भी बड़ा था और उससे भी पहले हो चुका था।[12]

मानगढ़ धाम बांसवाड़ा जिले में आनन्दपुरी से कुछ दूरी पर बना हुआ है। यह ऐसा स्मारक है जो गुरुभक्ति और देशभक्ति को एक साथ दर्शाता है। करीब सौ साल पहले 17 नवंबर, 1913, मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर गुरु का जन्मदिन मनाने के लिए एकत्र हुए हजारों गुरुभक्तों को ब्रिटिश सेना ने मौत के घाट उतार दिया था।[13]

संदर्भ

1. Natani, Prakash (1998). राजस्थान का स्वाधीनता आंदोलन. Jaipur: Granth Vikas. पपृ° 54–58.
2. ↑ Sahoo, Sarbeswar (2013). Civil Society and Democratization in India: Institutions, ideologies and interests. Oxon: Routledge. पृ° 127. आई°ऍस°बी°ऍन° 9780203552483.
3. ↑ पवार, डॉ. अशोक शंकरराव (2021). क्रांतिनायक :संत गोविंद गुरु बंजारा. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-93-5578-848-1.
4. ↑ अमर बलिदान का साक्षी मानगढ़ धाम
5. ↑ मानगढ़ में भील आदिवासियों का विद्रोह
6. "राजपूत जनसंहार: इतिहास में दफन सबसे बड़ी कुर्बानी". आजतक. 4 सितम्बर 2012. मूल से 2 फ़रवरी 2020 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 फ़रवरी 2020.
7. ↑ "Descendants of Mangad massacare seek recognition for past tragedy" (अंग्रेज़ी में). इंडिया टुडे. 10 सितम्बर 2012. मूल से 3 दिसंबर 2019 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 3 फ़रवरी 2020.
8. ↑ अमर बलिदान का साक्षी मानगढ़ धाम
9. Natani, Prakash (1998). राजस्थान का स्वाधीनता आंदोलन. Jaipur: Granth Vikas. पपृ° 54–58.
10. ↑ Sahoo, Sarbeswar (2013). Civil Society and Democratization in India: Institutions, ideologies and interests. Oxon: Routledge. पृ° 127. आई°ऍस°बी°ऍन° 9780203552483.
11. ↑ पवार, डॉ. अशोक शंकरराव (2021). क्रांतिनायक :संत गोविंद गुरु बंजारा. आई°ऍस°बी°ऍन° 978-93-5578-848-1.
12. ↑ अमर बलिदान का साक्षी मानगढ़ धाम
13. ↑ मानगढ़ में भील आदिवासियों का विद्रोह

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor: 8.118

doi crossref

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

निस्केयर NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIVE RESEARCH

IN SCIENCE | ENGINEERING | TECHNOLOGY

9940 572 462 6381 907 438 ijirset@gmail.com

Scan to save the contact details

www.ijirset.com